जन्म दिन विशेषांक

चैतन्य लहरी

खण्ड VI अंक 7 व 8 हिन्दी आवृत्ति

"अब आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। विश्वास रखें कि आपमें पूरे विश्व को परिवर्तित करने की सामर्थ्य है"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नाल गिरकर
162, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली-110067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110060.
फोन : 5710529, 5784866

खण्ड VI अंक 7 व 8

विषय सूचि

1. सम्पादकीय 1
2. प्रार्थना 2
3. फिलिप जेस की हृदयाभिव्यक्ति 3
4. पूजा प्रवचन-21.3.1994 3
5. श्रीमाता जी का प्रवचन-21.3.1994 6
6. ईसामसीह पूजा 8
7. श्रीमाता जी की मद्रास के सहजयोगियों से बातचीत..... 12
8. शिव रात्री पूजा वार्ता-14.3.1994 (दिल्ली) 14
9. सहज नियम 18

जन्म दिन विशेषांक

श्री माता जी का इक्हतरवां जन्मोत्सव कलकत्ता के कला मन्दिर हॉल में 21 मार्च 1994 की प्रातः मनाया गया। हमारे युग की इस महत्वपूर्ण घटना को मनाने के लिए पूरे विश्व से उनके सभी बच्चे एकत्रित हुए। देवी माँ को मुबारक बाद देने के लिए भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल जोशी वायुयान द्वारा वहां पहुंचे।

यह अत्यंत हृदय स्पर्शी उत्सव था। हमारे हृदय श्री माता जी के प्रति प्रेम से शराबोर थे और हम वास्तव में प्रेम के सागर बन गए थे। हर सहजयोगी प्रेमानन्द में गोते लगा रहा था। कलकत्ता के सहजयोगियों की मेहमान-नवाजी तथा प्रेमाभिव्यक्ति को देखकर श्रीमाताजी अत्यंत प्रसन्न हुईं। हर इंतजाम जो उन्होंने किया उसमें अपने हृदय का प्रेम उड़ेल कर रख दिया, प्रेम इतना अधिक स्पष्ट था।

गणपती पुले विषय में सूचना

रहने तथा खाने का खर्च प्रति व्यक्त 2000/-
बच्चे 10 साल से छोटे 1000/-
युवाशक्ति 21 साल से कम आयु और सहजकार्य में तल्लीन 1250/-

प्रार्थना

ज्ञान दे माँ ज्ञान दे,
हमें ज्ञान दे माँ निर्मले,
भक्ति सुमन महके हृदय में,
यही हमें वरदान दे,
ज्ञान दे माँ ज्ञान दे।

निर्मल ज्ञान की सागर ही हो तुम,
हे श्वेत सुन्दर शारदे,
दूर कर अवगुण मेरे,
निर्मल विद्या का दान दे,
आत्म ज्ञान की ज्योति जलाकर
सुप्त हृदय को प्राण दे,
ज्ञान दे माँ ज्ञान दे।

हैं बहुत से स्वपन मन में
सर्वजन कल्याण हो,
हम हैं तेरी सन्तान माते,
हममे जगत सहज निर्माण हो,
विश्व निर्मल धर्म फैले
यही हमें वरदान दे,

श्री आदि माँ तू आदि भवानी
तू प्रतिपालक सबकी जननी,
ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर में
है तेरा ही तेज समाया जननी,
करूं समर्पित हृदय श्री चरणों में,
पूर्ण कृपा कर हम पर जननी,
रहे चित्त में तेरा ध्यान सदा
वरदे यही माँ निर्मले
ज्ञान दे माँ ज्ञान दे।

'श्री चरणों में समर्पित'

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी के 71वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर फिलिप जेस की श्रीमाता जी के सम्मुख हृदयाभिव्यक्ति

इस अवसर पर मैं हम सभी को याद करवाना चाहता हूँ कि इस क्षण यूरोप के अधिकतर सहजयोगी श्रीमाता जी का जन्म दिन मनाने के लिए यूगोस्लाविया में एक बड़े सेमिनार में एकत्रित हुए होंगे और आपकी आज्ञा से जन्मोत्सव के इस अवसर पर मैं उनकी तीव्र इच्छा को आपके सम्मुख रखना चाहूँगा, कि कृपा करके यूगोस्लाविया में युद्ध, सारी राक्षसी प्रवृत्तियों, सारी नकारात्मकता तथा विश्वभर के सारे युद्धों को समाप्त कर दें।

श्रीमाताजी आप का स्वभाव तिहरा स्वभाव है और आपसे हमारे सम्बन्ध भी तिहरे सम्बन्ध हैं, अर्थात हम देवी रूप में आपकी पूजा करते हैं, गुरू रुप में आपके प्रति समर्पित होते हैं और माँ रूप में आपको प्रेम करते हैं। आपके इस तिहरे स्वभाव और आपसे हमारे तिहरे सम्बन्धों के कारण मैं तीन प्रकार से आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहूँगा। श्रीमाता जी सम्मानमय संकोच तथा एक ओर अत्यंत भय की तथा दूसरी ओर अत्यंत श्रद्धा की भावना के साथ हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी कृतज्ञता को स्वीकार करें कि हे देवी, आदिशक्ति आप अवतरित हुईं,कलयुग के अन्त में आपका अवतरण पृथ्वी तथा मानव जाति के उद्धार के लिए है। निःसंदेह सहस्रार भेदन को मानव विकास की महानतम घटना के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा। हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारे अन्दर के देवत्व को जागृत किया। आपने हमारे जीवन को अर्थ प्रदान किया, सृष्टि को अर्थ प्रदान किया और हमारे लिए आपने अपने साम्राज्य, (परमात्मा के साम्राज्य) के द्वार खोल दिए। धर्मपरायणता और मूल्यविहीन पश्चिमी समाज का एक सदस्य होते हुए भी, गुरूमयी श्रीमाताजी,मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि सभी गुरूओं की मां के रूप में आपने हममें विवेक जागृत किया, आवश्यक मर्यादाएं प्रदान कीं और पूर्ण मानव बनने के लिए हमें आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन प्रदान किया ताकि हम सारे देशों, सारे राष्ट्रों के समाज में दैवी प्रेम को स्थापित करने के पूर्ण यन्त्र बन पाएं।

श्रीमाताजी आपका बालक होने के नाते और आपके सभी बच्चों की ओर से मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। श्रीमाताजी आपका अथाह प्रेम, धैर्य,सहनशक्ति हमें वह आन्तरिक्ष प्रदान कर रहा है जिसमें हम छोटे-छोटे शिशुओं से बचपन, किशोरावस्था और वयस्कता की ओर विकसित हो सकते है। श्रीमाता जी जो सुरक्षा आप हमें प्रदान कर रही हैं और जिस प्रेम के बन्धन में आप हमें हर समय रखती हैं उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। परन्तु श्रीमाता जी, मैं कभी नहीं चाहूँगा कि बड़ा होकर मैं वयस्क बनूं। मैं सदा शिशु ही बना रहना चाहूँगा ताकि आपकी साड़ी के पल्लू को पकड़कर आपके मातृत्व का आनन्द जीवन के हर क्षण में ले सकूं। आज के पवित्र दिन, श्रीमाता जी,हम सभी सहजयोगी अपने आपको, अपने हृदय, अपना समर्पण अपनी वचन बद्धता, अपने गुण और अपनी प्रतिभा आपके श्री चरणों में अर्पण करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि विश्व निर्मलाधर्म को इस पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए यथाशक्ति कार्य करेंगें। श्रीमाता जी आपकी आज्ञापालन करने के लिए हम सदा उद्यत रहेगें। हम सब इस शुभावसर पर प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में, कलान्तर में, आने वाले युगों में यह दिन सबसे पवित्र दिन बन जाए और ईसाइयों के लिए यह ईसा जयन्ती की तरह से हो जाए। परन्तु सारे राष्ट्र और विश्व की सभी मानक जातियां इसे उत्सव के रूप में मनाएं।

जय श्रीमाता जी।

71वीं जन्म दिन पूजा
परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)
कलकत्ता 21 मार्च 1994

हर वर्ष बहुत से लोगों के जन्म दिवस होते हैं और हम शपथ लेते हैं कि हम अब अमुक बुरा कार्य छोड़ देगें। जीवन में अपने विकास को देखने का यह बहुत अच्छा तरीका है। बहुत से लोगों ने, जिन्होंने आध्यात्मिक जीवन में महान ऊंचाईयाँ प्राप्त कीं, उन्हें जन्मोत्सव की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि विकास, सूझबूझ और सीखने की शुरूआत करने के लिए हर दिन जन्म दिन है। उनके लिए हर दिन नव वर्ष का दिन है। अपने जीवन में हम देखते हैं कि हमारा वातावरण बहुत ही धीरे-धीरे परिवर्तित होता है। इस अपरिवर्तनशीलता पर कभी-कभी तो आपको शोक भी होता है। परन्तु सूक्ष्म रूप से हमारे अन्दर और बाहर एक महान परिवर्तन घटित हो रहा है। आज मानव पूरे वातावरण पर शासन कर रहा है। मैं नहीं जानती कि कहां तक परम चैतन्य इसे चला रहा है, परन्तु स्वयं को जीवन के नये आयामों के प्रति खोलना हमारा कार्य है। उदाहरणार्थ अपने अन्तर्दर्शन से हमें पता चल जाता है कि पुरानी छोटी-छोटी मूर्खताएं अभी भी हमें चिपकी हुई हैं। इनको

छोड़ने की कसमें हमें नहीं लेनी चाहिएं साक्षी भाव से यदि आप इन्हें देखें कि किस विनाश पथ पर ये आपको ले जा रही हैं तो तुरन्त ही आप इन्हें त्याग देंगे। आपको शपथ लेने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि अब आप समर्थ है अर्थात् पूणतः शक्तिशाली हैं जो भी कुछ आप सोचते हैं वह गलत है, इस पर जब आप अपना चित्त डालेंगे तो धीरे-धीरे यह सारे सन्देह दूर कर देगा।

वे सारी समस्याएं सम्बन्ध, बन्धन और अहम् जो 'अभी भी आपको चिपके हुए हैं' आप उन्हें त्याग देंगे। आपके चित्त से ही वे दौड़ जाएंगे। तब आपको लगेगा कि दिन प्रतिदिन आपका चित्त पवित्र, शक्तिशाली एवं करुणामय बन रहा है। सामान्यतः जो भी प्रक्रिया आपके चित्त में होती है वह समाप्त हो जाएगी और आप साक्षी रूप से सारी चीज को देखने लगेगें और उस साक्ष्य शक्ति के माध्यम से आपकी चित्त शक्ति कार्यान्वित हो जाती है और कार्य करती है। यह शक्ति न केवल आप पर कार्य करेगी परन्तु आपसे सम्बन्धित हर चीज पर कार्य करेगी। सर्वप्रथम आपके ध्यान धारणा के माध्यम से, ध्यान की उस अवस्था में आप अपने अन्दर विस्तृत हो जाते हैं। आप वर्तमान में रहते हैं। उस दिन किसी ने मुझ से पूछा कि आपका पिछला जन्मदिन कहां मनाया गया था? मुझे याद ही न था। वैसे मेरी स्मरण शक्ति अच्छी है। सम्भवतः हर समय, हर दिन, वर्तमान में रह कर आप विकसित होते हैं और आप यह भूल जाते हैं कि कब और कहा यह विकास घटित हुआ।

मेरा अपना विकास भी इसी प्रकार हुआ। हर बार जब मैं किसी नये स्थान पर जाती हूँ तो मुझे पता चलता है कि वहाँ कुछ बहुत ही अच्छे नये लोग सहजयोग में आये हैं और पुराने लोगों में से कुछ व्यर्थ के लोग सहजयोग छोड़ गए हैं। यह वैसे ही है जैसे पेड़ के विकास में नये पत्तों का निकलना तथा पुराने पत्तों का गिर जाना। परन्तु सहजयोग में यह कुछ भिन्न है। सहजयोग में बहुत ही थोड़े से पत्ते झड़ते हैं, प्रायः आपको अत्यन्त अच्छे लोगों का हरा भरा उपवन देखने को मिलता है। मेरे लिए यह चमत्कारिक आतिशबाजी की तरह है। एक छोटी रेखा की तरह शुरू हो कर यह बहुत से सुन्दर रूप धारण कर लेता है। हमारे, सहजयोग के तथा मानव के साथ क्या घटित होने वाला है, इसको स्पष्ट देख पाना कठिन कार्य है। मैंने कल्पना करना कभी नहीं सीखा। परन्तु जो दृष्य आप देख रहे हैं वह अद्वितीय है। मैं सभी सहजयोगियों को दैवी प्रेम से शराबोर अवस्था में अत्यन्त सुन्दर एवं गहन ढंग से अपनी अभिव्यक्ति करते हुए देख रही हूँ। यह अवस्था जब आती है तो आपके चित्त को इस प्रकार परमात्मा की कृपा से आनन्द विभोर कर देती है कि आप उस क्षण तक को भूल जाते हैं। जब आप मेरा जन्म दिन मनाते है तो वह भी ऐसा ही एक क्षण होता है।

मैं तो यह भी भूल जाती हूँ कि कितने वर्ष मुझे इस पृथ्वी पर हो गए हैं क्योंकि इस आनन्द विभोर स्थिति में समय, तिथियों और वर्षों का कोई निशान नहीं रह जाता। जैसे बिना पूर्व कल्पना के यदि आप ताजमहल को देखने गये हों और वहां इतना सुन्दर भवन सामने पाकर आप मन्त्रमुग्ध से हो जाते हैं। ऐसे क्षणों में आपको समय का ज्ञान नहीं रहता। आपको यह भी याद नहीं रहता कि किस प्रकार आप वहां पहुँचे। उस स्वपन की वास्तविकता को देखते ही उसके पीछे की सारी कहानी समाप्त हो जाती है। स्वपन की यह वास्तविकता मेरे विचारों और कल्पना से पर की बात है।

अब भी कभी-कभी मुझे विश्वास नहीं होता कि इतने सारे सहजयोगी हैं जिन्होंने इस सूक्ष्म ज्ञान को प्राप्त किया है। मैं नहीं जानती थी कि इतने अधिक साधक हैं। मैं यह भी नहीं जानती थी कि पृथ्वी पर इतने सूक्ष्म लोग हैं। विश्व भर में, जहाँ भी मैं जाती हूँ, अनगिनत गहन जिज्ञासु मेरे सम्मुख होते हैं। उस क्षण समय रुक जाता है। अनुभव के अतिरिक्त किसी अन्य चीज का लेखा जोखा नहीं रहता। यह अनुभव निराकार रूप में होता है। इसका वर्णन नहीं हो सकता, यह शब्दों एवं वर्णन से परे है। इस समय आप वास्तव में निर्विचार हो जाते हैं और यही वह समय है जिसका आनन्द उठाना चाहिए।

घड़ी या समय का बन्धन आज के युग का सबसे बड़ा अभिशाप है। हम बस समय ही देखते रहते हैं। हमने समय की सीमा पार कर ली है, 'कालातीत,' समझने का प्रयत्न करें कि क्यों हमने इसे पार किया, क्योंकि समय हमारे अनुसार चलता है। आप इसका अनुभव कर सकते हैं। एक दिन मैं दिल्ली से आ रही थी। हमारे घर के लोग समय के बहुत पाबन्द हैं। उन्होंने मुझे परेशान कर दिया कि देर हो रही है। जब मैं हवाई अड्डे पर पहुँची तो पता चला कि वायुयान प्रतीक्षा कर रहा है। जल्दी की कोई बात न थी। जाने में 15-20 मिनट और लगने थे। पर हवाई अड्डे का नाम ही लोगों को बेचैन कर देता है। वायुयान पर जाना उन्हें ऐसा प्रतीत होता है जैसे युद्ध लग गया हो। मैं इतना सफर करती हूँ फिर भी, सौभाग्य से, कभी मेरा वायुयान या रेल नहीं छुटे। हर बार मुझे लगा कि वायुयान मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। एक बार हमें प्रेग से वियेना होते हुए पोलैंड जाना था। एक महान सहजयोगी हमारे साथ थे। उन्होंने बताया कि वायुयान ग्यारह बजे चलेगा। हवाई अड्डे से उन्होंने मुझे फोन किया कि यान सोढ़े नौ बजे छूटेगा। मैं तैयार थी, कार में बैठी तथा अड्डे पहुँच गयी। पहुँचने में 15 मिनट की देर हुई तो भू-अधिकारी-महिला मुझ पर चिल्लाने लगी। वह सहजयोगी इस बात को सहन न कर पाया। उसे लगा कि उसकी गलती के कारण ही यह महिला मेरी श्रीमाता जी पर चिल्ला रही है। उसे यह सहन नहीं हुआ। वह बहुत खिन्न था। चिल्लाती हुई इस महिला के साथ हम वायुयान में गए। वहां हमने देखा कि चालक एवं इन्जनीयर मशीन को ठीक करने में लगे हुए थे। सहजयोगी इतना खिन्न था कि उसकी

आँखों से आँसू झड़ने लगे। वो मेरे पीछे बैठे थे। मैंने मुड़कर उनकी ओर देखा और कहा कि 'सब ठीक है, चिन्ता मत करो'। "नहीं श्रीमाता जी, मेरे कारण उसने आपसे इतना कुछ कहा। मैं इसे सहन नहीं कर सकता"। उसके आँसू थम नहीं रहे थे। एक मिनट के अन्दर साफ आकाश को विशालकाय हाथी के आकार के बादलों ने घेर लिया। हवाई पतन की छत पर खड़े सभी सहजयोगियों ने यह घटित होते देखा। पूरा आकाश एकदम काला हो गया। मैंने कहा, "देखो इस व्यक्ति के आँसुओं में कितनी शक्ति है"। तब अधिकारियों ने घोषणा की कि यान में खराबी है और आपको यान से उतरना होगा। उतरकर हम विमान कक्ष में आए। तब वह सहजयोगी उस महिला अधिकारी के पास गया और उससे कहा कि अब हम किस पर चिल्लाएं? वायुयान अब नहीं जा रहा है।

"क्या हम तुम पर बिगड़ें? मेरी मां पर बिगड़ने कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?" हवाई अड्डे पर अन्य जो भी अधिकारी थे वे घबरा गये। मैनेजर ने कहा कि यान चलने में अभी पांच घंटे हैं और हम आपको हवाई अड्डे से बाहर जाने की आज्ञा देते है। तब वह मुझे एक विशेष रेल से बाहर ले गया। इस प्रतिक्रिया को मैं समझ न सकी। बाहर जाकर मैंने कुछ खरीददारी की और जब हम वापस आए तो हवाई अड्डे के अधिकारियों को आश्चर्य की स्थिति में पाया क्योंकि केवल हमारा ही वायुयान जाने वाला था। बाकी सारा यातायात रुक गया था। वायुयान पर चढ़ने के लिए जब हम चले तो उस भद्र पुरुष ने कहा कि "माँ मेरी कमर में भयंकर दर्द है क्या आप मेरी सहायता कर सकती है"। एक अन्य महिला ने मुझे उसके दुखते हुए कंधे पर हाथ रखने कि प्रार्थना की। मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे आराम मिलने लगा। तब मैंने वायुयान में चढ़ना चाहा पर उसी व्यक्ति ने आकर मुझ से प्रार्थना की कि मैं अपना हाथ उसकी पीठ पर रख दूं। मैंने कहा कि मुझे वायुयान पर चढ़ना है। वह कहने लगा कि, "मैं आपके साथ चलूंगा"। मेरे साथ-साथ वह दो मिनट तक चला और कहने लगा कि मैं अब ठीक हूँ। सारा वातावरण परिवर्तित हो गया। इसका प्रभाव वहां पर उपस्थित लोगों पर पड़ा। मैं हैरान थी कि इस सहजयोगी के आंसुओं ने किस प्रकार यह करिश्मा किया? उस क्षण कि कल्पना कीजिए कि जब उसकी आंखों से आंसू गिरने लगे थे। उस क्षण में उसकी आंखों ने एक बहुत बड़े नाटक कि अभिव्यक्ति की और अन्ततः हमने पाया कि हवाई अड्डे पर खड़े सभी लोग अत्यन्त नम्र एवं सम्मान भय हो गये थे। समय के बारे में जब हम सोचने लगते है तो हमे सोचना चाहिए कि समय हमारा दास है,हम समय के दास नहीं हैं। मैं आपको एक हजार एक कहानियां बता सकती हूँ जब देर हो जाने पर, या समय की चिन्ता न करने पर मैंने इस प्रकार की सुन्दर अभिव्यक्तियां एवं नाटक देखें। दैवी शक्ति की इस कला को देखकर मैं हैरान थी कि किस प्रकार लोग समय की इतनी चिन्ता कर पाते हैं।

समय यदि वास्तव में आवश्यक है, यदि हम सब लोग हर वर्ष इस समय को अपने जन्म दिन के रूप में देखें और यदि आप सोचते हैं कि समय अत्यन्त महत्वपूर्ण है तो आज के युग में वास्तव में हमें वह समय अपने ध्यान और सहजयोग की सामूहिक सभाओं को करने के लिए चाहिए। मुझे याद है कि हमारे देश के स्वतन्त्रता संग्राम के समय जिसमें मेरे मातापिता तन-मन और धन से लड़े उस समय वे समय की बिल्कुल चिन्ता नहीं करते थे। वे जीजान से इस कार्य पर लग गये क्योंकि देश को साम्राज्यवाद के शिंकजों से स्वतन्त्र करना था। जेल से भागे हुए किसी स्वतन्त्रता सेनानी को अगर उन्होंने मिलना होता था तो वही उनके लिए महत्वपूर्ण होता था और इसके लिए वे समय की चिन्ता न किया करते थे। कोई अन्य बताता न था और न कोई उन्हें भाषण देता था। उनके लिए ये सब आन्तरिक था। आज भी वही स्थिति है। यह भी संकटकाल है एक अत्यन्त सूक्ष्म संकट की स्थिति कि सहजयोग प्रसार से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। सभी लोगों को यदि इसका संदेश न मिला तो इसके लिए हम उत्तरदायी होंगे। ईसा और बुद्ध के समय यात्रा के लिए वायुयान नहीं होते थे। ध्वनिवर्धक यन्त्र और दूरदर्शन न था। ये सारी चीजें अभी आयीं है। यह परम चैतन्य का कार्य है कि वैज्ञानिकों के माध्यम से तथा दूसरे ज्ञान से यह सारी अभिव्यक्ति हुई है। पुराने लोगों को न तो जनता का सामना करना होता था और न ही इतने बड़े स्तर पर लोगों को आत्म साक्षात्कार देना होता था। आज जो ये सारे अविष्कार आप देखते है ये सब सहजयोग के लिए हैं।

आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि बिना सहजयोग के इस विश्व का क्या होगा। सर्वप्रथम और सर्वोपरि बात यह है कि हमारे हृदय में अब शान्ति बिल्कुल नहीं है। हम शान्ति की बात करते हैं और उन लोगों को भी जानते है जिन्हें शान्ति पुरस्कार प्राप्त हुए। पर उनके हृदय में भी शान्ति नहीं है। मानव के हृदय में जब तक शान्ति नहीं होगी तब तक विश्व में शान्ति नहीं हो सकती। हम ही लोग युद्ध की सृष्टि करते है। हम ही भिन्न प्रकार की हिंसा करते हैं। हम ही लोगों की परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने की सम्भावना है। अतः लोगों के हृदयों में शान्ति स्थापित करके ही शान्ति प्राप्त की जा सकती है और यह तभी संभव है जब आप निर्विचार समाधि को प्राप्त कर लें। आप वर्तमान में रहें तो आप हैरान हो जाएगें कि आप चट्टान की दृढ़ता से खड़े हैं क्योंकि तब वास्तविकता आपके हाथ में होगी। जिस तरह से भी आप चाहें कार्य कर सकते हैं। वास्तव में मैं कुछ भी कार्य नहीं कर सकती, परम चैतन्य ही सब कुछ करता है। आपके लिए भी यह इसी प्रकार कार्य करेगा परन्तु आपको स्वयं पर तथा सहजयोग पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। पूर्ण विश्वास। तभी हम वह उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं कि विश्व के अधिक से अधिक लोग परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर

सकें। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। सांसारिक या मूर्खतापूर्ण सारे कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण। चित्त इस बात पर होना चाहिए कि कितने लोगों को हम सहजयोग में ला रहे हैं। कितने लोगों को हम बचा रहे हैं? इसके विषय में आप क्या कर रहे हैं? हर सुबह जब आपको इसके बारे में सोचना होगा तो किस प्रकार समय और तिथि याद रख सकते हैं। अब जब कि आप संकट कालीन स्थिति में हैं और जानते हैं कि इसका मुकाबला करना है तो कैसे आप अपने चित्त को सांसारिक वस्तुओं और सांसारिक उपलब्धियों पर रख सकते हैं? आप चिन्ता न करें सांसारिक कार्य अपने आप होगें। वास्तव में जो मोड़ आपने लेना है वह है, सहजयोग की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित करना, आन्तरिक एवं बाध्य् रूप से। पृथ्वी पर वास्तव में यदि हम शान्ति चाहते हैं, अपने लिए यदि हम उन्नति चाहते हैं और सभी प्रकार के शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक समस्याओं का समाधान चाहते हैं तो क्यों नहीं हम सहजयोग में आ जाते जहां हमें कुछ नहीं करना? केवल अपनी कण्डलिनी को उठाना है, और आनन्द की उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए थोड़ी सी ध्यान धारणा करनी है। आज मेरे भाव अत्यन्त आनन्दमय है क्योंकि अब मैं देख सकती हूँ कि किस प्रकार चीजें घटित हो रही हैं और किस प्रकार एक व्यक्ति हजारों सहजयोगी बना सकता है। मैंने एक चमत्कार देखा। एक बार मैंने कहा कि एक बीज के अन्दर हजारों पेड़ हैं जिन्हें इसने उगाना है। टीशू कल्चर की एक नई तकनीक को देखकर मैं आश्चर्य चकित रह गयी कि एक बीज के अन्दर जन्म देने वाले छोटे-छोटे तत्व थे जो बाहर आ गये थे। इसी प्रकार आप सब में सार्मथ्य है। और आप सब इस कार्य को कर सकते है। परन्तु इसके लिए आपका स्वयं पर दृढ़ विश्वास होना और सहजयोग के प्रति पूर्ण निष्कपटता का होना आवश्यक है। ऐसा हो जाए तो वास्तव में आज आपने मेरा जन्मदिन मनाया है। यदि आप सोचते है कि मेरा जन्मदिन महत्वपूर्ण है तो मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर व्यक्ति अपने आध्यात्मिक जन्मदिन को प्राप्त कर ले।

परमात्मा आपको धन्य करें।

71वां जन्मोत्सव
परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी के प्रवचन का सारांश
कलकत्ता 21 मार्च 1994

मैं बिल्कुल नहीं समझ पाई कि किस प्रकार कार्य हो रहे हैं, किस प्रकार पूरे विश्व में सहजयोग फैल गया है और किस प्रकार आप लोग सहजयोग में आयें हैं, यह अत्यंत विशिष्ट समय है, बसन्त का समय। इस बसन्त के समय यह सब आयोजन किया गया है ताकि यह घटित हो सके। मेरे विचार में मैं मात्र एक माध्यम हूँ और यह नहीं जानती कि किस प्रकार सब कुछ कार्यान्वित हो रहा है बस मेरा हृदय आपके प्रति कृतज्ञता भावना से परिपूर्ण हो गया है कि आपने सहजयोग को अपना लिया। अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान होने के कारण भौतिकता से परिपूर्ण इस कलयुग में यह कार्य अति कठिन है। मैंने तो यह भी न सोचा था कि मैं एक दर्जन सहजयोगी बना पाऊँगी। अतः मुझे समझ आया है कि यह उपयुक्त समय है और इस समय पूरा विश्व सत्य को अपना लेगा। सत्य विजयी होगा।

चहूँ ओर, जीवन के हर मोड़ पर, इतना असत्य है कि अपने व्यक्तित्व के हर आयाम पर हम सभी प्रकार के भ्रमों को स्वीकार कर लेते हैं। भ्रममय आशावाद की इस स्थिति में हमारा यह चाहना कि बहुत से लोग सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें, अत्यन्त असाधारण बात है। मेरे लिये तो यह आश्चर्य है।

जहाँ-जहाँ भी काली विद्या है वहाँ गरीबी होगी, जैसे केरल और बंगाल में काली विद्या के कारण दरिद्रता है। जितने शीघ्र यह काली विद्या चली जाए उतना ही अच्छा है क्योंकि वे आपको केवल शारीरिक एवं मानसिक रूप से ही हानि नहीं पहुचाते, आपकी कुण्डलिनी को भी हानि पहुचाते हैं। आर्थिक रूप से भी वे आपको हानि पहुँचाते हैं। उनको धन दे देकर लोग अत्यन्त दरिद्र हो गए है, परन्तु बंगाल के लोगों को 'माँ' से अत्यन्त प्रेम है। यहाँ पर एक छोटी सी लड़की को भी 'माँ' कहा जाता है। एक बार एक कम्युनिष्ट मंत्री मुझे मिलने को आये। उसने कहा "माँ मुझे खेद है कि आने में देर हुई क्योंकि मैं पूजा के लिए काली मन्दिर चला गया था"। मैंने कहा, "आप तो कम्युनिस्ट हैं आप क्यों काली मन्दिर पर पूजा करते हैं"? उसने कहा, कम्युनिस्ट होने के कारण क्या मैं माँ को भूल जाऊँ? अच्छा होगा कि मैं साम्यवाद को छोड़ दूं क्योंकि माँ ही मेरी सब कुछ है"। मैं आश्चर्य चकित थी कि साम्यवादी होते हुए भी उसे माँ पर विश्वास था। अतः बंगाल में मातृत्व की बहुत पूजा होती है और उनके प्रेममय स्वभाव का यही आधार है। वे अत्यन्त सहनशील लोग हैं, आप नहीं जानते कि एक माँ को किस प्रकार अपने बच्चो पर गर्व होता है। बच्चों का इतना विकसित होना व्यक्ति को उसके अपने उत्थान एवं उपलब्धियों का आनन्द प्रदान करता है। बहुत से कवि वक्ता, संगीतज्ञ, व्यापारी एवं सरकारी अफसर, सब ने सहजयोग अपनाया है। मैं हैरान होती हूँ कि किस प्रकार वह सहजयोग अपना सकें! पूर्णतया समर्पित हो सके और

इतने अच्छे परिणाम दिखा सके? ऐसा लगता है जैसे किसी ने उनमें यह ज्योति प्रज्वलित कर दी हो!

कुण्डलिनी की यह शक्ति आपके अन्दर विद्यमान है। हमने बस इसका उपयोग करना है। आपके अहम् एवं बन्धनों ने इसे आच्छादित किया हुआ है, अपनी कुण्डलिनी को बढ़ने दें, यह आपको प्रमाणित कर दिखाएगी कि आप कितने महान एवं गरिमामय हैं। मैं कुछ नहीं कर रही। सारा कार्य आपकी कुण्डलिनी ही कर रही है। बस एक चीज है, कि वह मुझे जानती है, बस। यह परिवर्तन जो आप लोगों में घटित हुआ है यह भी आपके पूर्व जन्म के सकृत्यों एवं आपके विवेक को दर्शाता है कि आपने इसे स्वीकार किया। कबीर भी खो गए थे उन्होंने कहा, ''कैसे समझाऊँ सब जग अन्धा''। सभी संत तंग आ गए कि ये लोग, तो सूक्ष्म ज्ञान को नहीं लेगें और सोचा कि समाधि ले लेना ही अच्छा है। परन्तु आज आप देखते है कि सब कुछ तैयार है। आज वसन्त का समय है और इस विश्व को परिवर्तित होते हुए देख कर मां आनन्द से भर गई हैं।

बहुत सारे लोगों ने विश्व को ऐसा बनाने के बारे में सोचा। बुद्ध, महावीर, ईसा, श्री कृष्ण, श्री राम, लाओत्से सभी ने सोचा कि ऐसे विश्व को बनाएँ कि हम परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर सकें। मैं आश्चर्य चकित पर सन्तुष्ट भी हूँ कि आप लोगों ने इस बात को बहुत गम्भीरता पूर्वक लिया और हर देश में इसे कार्यान्वित कर रहे हैं। मैं यदि अकेली यह कार्य कर सकती तो आपको सहजयोगी क्यों बनाती? आपकी तरह पवित्र माध्यम होना आवश्यक था। इसके बिना यह कार्य न हो पाता। इस प्रकार सहजयोग का प्रचार हो रहा है।

आप में सभी शक्तियाँ है। इन शक्तियों को धारण करने का प्रयत्न करें। किसी भिखारी को राजा बना कर यदि सिहांसन पर बिठा दिया गया हो और फिर भी वह भीख मांगे तो उसे राजा बनाने का क्या लाभ? अब आप लोग परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं। विश्वास रखें कि आप सब में विश्व को परिवर्तित करने की शक्ति है। आप ही वो लोग हैं जिन्हें वास्तविकता में चुना गया है। अतः उत्तरदायित्व को समझें। सहजयोग में आपको कुछ नहीं करना पड़ता, न धन देना पड़ता है और न ही सिर के बल खड़ होना होता है, न व्रत करने होते है और न परिवार को त्यागना होता है। आपको मात्र शुद्ध इच्छा करनी होती है, जो कि कुण्डलिनी की शक्ति है, एवं अपने योग को बनाए रखना होता है। सामूहिक बनें और सदा उनके विषय में सोचें जिन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं प्राप्त हुआ। उनसे नाराज न हों। धैर्य होना अति आवश्यक है। लोगो के प्रति करुणामय हों, इस करुणा से इतने लोग सहजयोग में आयेगें कि आप आश्चर्यचकित रह जाएगें।

एक अन्य हैरान करने वाली बात यह है कि पश्चिमी देशों के लोग अत्यन्त अबोध बन गए हैं, उनमें इतना माधुर्य, नम्रता, सुन्दरता, प्रगल्भता एवं स्नेह है, और करुणा तथा सूझबूझ से भी वे परिपूर्ण है। वे सब इतने विशिष्ट और देवदूतसम हैं कि मैं हैरान होती हूँ कि यह कैसे हो गया। यह शक्ति उनके अन्दर विद्यमान थी, उन्होंने बस इसे प्राप्त कर लिया है, बजाय इसके कि आप मुझे मुबारकबाद दें मैं आपको मुबारिक देती हूँ, क्योंकि मैं जो हूँ, मैं तो वही थी। मैंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है। आप लोगों ने इसे प्राप्त किया है और इसके लिए मैं आपको बधाई देती हूँ।

बहुत से रोग सहजयोग से ठीक हो गए। एक व्यक्ति जिसकी हृदय की एक बार शल्यक्रिया हो चुकी थी उसे बताया गया कि दोबारा उसके हृदय का आपरेशन होगा। उसने प्रार्थना की कि ''श्रीमाता जी मैं दोबारा से यह आपरेशन नहीं करवाना चाहता''। जब वह दोबारा परिक्षण के लिए गया तो चिकित्सकों ने पाया कि उसकी महाधमनी जो कि बाधित थी, वह खुल गई है और वह एक सामान्य व्यक्ति बन गया है। सामान्य बन कर वह टेनिस खेलता है। वो चिकित्सक जो कि सहजयोगी भी नहीं थे उन्होंने सहजयोग पर एम.डी. की उपाधि प्राप्त की है। जगह-जगह यह घटित हो रहा है। लोग रोग मुक्त हो रहें हैं, उनके मस्तिष्क विकसित हो रहे हैं, परिवारिक जीवन, नौकरियाँ एवं व्यापार बेहतर हो रहे हैं। सम्बन्ध सुधर रहे हैं। परन्तु इसके लिए हममें शुद्ध इच्छा का होना अत्यन्त आवश्यक है अर्थात् ध्यान करना अत्यन्त आवश्यक है। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

आपने जो कुछ भी मेरे लिए कहा उसके लिए आपका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मुझे रविन्द्रनाथ टैगोर की याद आती है जिन्होंने एक बार एक कविता लिखी जिसकी सभी लोगों ने प्रशंसा की। इन टिप्पणियों को पढ़ कर उन्होंने कहा ''मैं नहीं जानता था कि मैंने यह सब लिखा''। मैं जो करती हूँ वह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना आपका इसे स्वीकार करना और इसका आदान-प्रदान करना। यही महत्वपूर्ण है और यह कलयुग में घटित हुआ है। बारम्बार मुझे आपका धन्यवाद करना है। आप एक अत्यन्त सुन्दर एवं समृद्ध जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री ईसा मसीह पूजा

गणपति पूले 25-12-1993

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

आज हम ईसा का जन्म दिन मना रहे हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है क्योंकि ईसा विरोधी इसाई धर्म के कुछ अधिकारी ईसा के जन्म के विरुद्ध बाते कर रहे हैं। उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। वे आत्म साक्षात्कारी नहीं और न ही उन्हें परमात्मा की कोई समझ है। वे कह रहे हैं कि मेरी मां कुमारी नहीं थी तथा ईसा का जन्म इस प्रकार नहीं हुआ। आप में से कुछ लोग पत्र लिखकर उनसे पूछ सकते हैं कि किस अधिकार से वे इस प्रकार की बातें कर रहे हैं। सत्य यज्ञ में उनका भंडा फोड़ हो जाएगा क्योंकि बिना सर्वव्यापक शक्ति को अनुभव किए उन्हें इस प्रकार से बाते करने का कोई अधिकार नहीं है। वे नहीं जानते कि किस प्रकार चमत्कार घटित होते हैं। परमात्मा के आर्शीवाद से ही चमत्कार होते हैं। आप सब ने परमात्मा की इस कृपा का अनुभव किया है। मैं एक सर्वसाधारण उदाहरण सुनाउंगी। इस वर्ष नवरात्रि पूजा के अवसर पर एक फोटो लिया गया जिसमें पृष्ठभूमि में एक पर्दा दिखाई दिया और उस पर्दे के पीछे से सूर्य झांक रहा था। सूर्य की आंखे थी, नाक था और वह मुस्करा रहा था। बाद में जब हम मास्को गये तो मंच (स्टेज) पर वही दृश्य देखा। परम चैतन्य ने उसे प्रकट होने और बनने से डेढ़ महीना पूर्व चित्रित कर दिया था। इसी प्रकार आप हजारो चमत्कारों की बात कर सकते हैं। जब मैं मास्को जा रही थी तो बाहर का तापमान -20° था। जब हम मास्को हवाई अड्डे पर उतरे तो यह -15° हो गया और दोपहर पश्चात तापमान -4° था। अगले दिन यह +10° था। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता है ठंड बढ़ती है पर इस बार यहां पर गर्मी बढ़ी। इससे प्रकट होता है कि सभी तत्त्व हमारी सहायता कर रहे हैं। छोटी बड़ी सभी समस्याएं हल होती चली जाती है। कार्यो के होने के ढंग से आपको हैरानी होती होगी।

लोग पूछते हैं कि ईसा को क्यों क्रूसारोपित होना पड़ा? उन्हें बचाया क्यों न जा सका? इसका कारण यह था कि ईसा को आज्ञा चक्र के सकीर्ण मार्ग से गुजरना था। सूली (क्रास) से गुजरकर उन्हें स्वंय को स्थापित करना था। उनके जीवन का संदेश सूली नहीं है। यह पुर्नजन्म का संदेश है। वे पूर्न जीवित हुए ताकि अब आप भी पुर्नजन्म ले सकें। सभी अवतरणों में कुछ न कुछ अद्वितीय है। परन्तु पुर्नजन्म इसकी पराकाष्ठा है। मृत्यु को प्राप्त करके ही ईसा ने यह कर दिखाया। बिना मृत्यु के पुर्नजन्म कैसे लिया जा सकता? बहुत सी चीजे देखने में बहुत कठिन हैं परन्तु वास्तव में नहीं है। बहुत से लोग कहते हैं कि ईसा ने पुर्न जन्म नहीं लिया। परन्तु वास्तव में वे बाद में काश्मीर में मृत्यु को प्राप्त हुए। इसके प्रमाण है। फिर भी लोग इसका विश्वास नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि बहुसंख्यक होने के कारण वे कुछ भी कर सकते है। परन्तु अब बहुसंख्या भी कोई सहायता न कर पाएगी। मोहम्मद साहब ने कुरान में कहा है कि आपको ईसा की माँ की पवित्रता की पूजा करनी चाहिए। उन्होंने माँ का सम्मान किया। परन्तु बाईबल में मेरी माँ को कोई सम्मान नहीं दिया गया। ईसा विरोधी पॉल के कारण वे उन्हें एक 'स्त्री' कहते हैं। पॉल ने इसाई धर्म की बागडोर अपने हाथ में ले ली और इसका प्रसार किया। बाइबल में अपना महत्व दर्शाने के लिए पॉल ने पीटर का उपयोग किया जो कि ईसा का अधमतम शिष्य था। उनके बारे में ईसा ने कहा कि, "शैतान तुम पर काबू पाएगा।" ऐसे भी लोग है जो ये कहते है, "कुंवारी लड़की से ईसा का जन्म कैसे हो सकता है।" भारतीय श्री गणेश की पूजा करते है। श्री गणेश भी ईसा सम हैं। हमें विश्वास है कि गौरी मां ने कौमार्यावस्था में ही उनकी सृष्टि की। यह हमारा विश्वास है। लेकिन पश्चिमी देशों में तर्कवाद ही विश्वास है। बहुत से लोग केवल मिथ्या बातों को ही लिखते हैं। समाचार पत्रों में यह सारी मूर्खता पूर्ण बाते छापने का क्या लक्ष्य है? आपको समझना होगा कि तर्क बाद से आप सत्य को नहीं जान सकते। बुद्धिवाद बहुत ही सीमित, बंधनयुक्त एवं अहंकार पूर्ण है। बुद्धिवाद किस प्रकार आपको ईसा के बारे में सच्चाई बता सकता है? अब तो हमारे पास वैज्ञानिक प्रमाण भी है। कार्बन को यदि आप दाएं से बाएं को देखें तो इसके कणों में आपको स्वास्तिक दिखाई देगा। लोगो ने इसके माडल बनाए हैं। इसे यदि आप बाएं से दाएं को देखेगे तो ओंकार दिखाई देगें। नीचे से ऊपर को देखने पर अल्फा और ओमेगा दिखाई पड़ेगें। ईसा ने कहा था "मैं ही अल्फा (आदि) हूँ और मैं ही ओमेगा (अन्त) हूँ।" प्रतीकात्मक रूप में यदि आप नीचे से ऊपर को देखें तो आप इसे स्पष्ट देख सकते हैं। एक ओर ओंकार दूसरी ओर अवतरित एक-दूसरे से जुड़े हुए। जब वे उत्थित और अवतरित होते हैं तब वे अल्फा और ओमेगा बन जाते हैं।

ईसा विरोधी लोगों के मस्तिष्क में यह बात नहीं बैठती। वे यह नहीं समझ सकते कि दैवी शक्ति यह सब कर सकती है। आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार, आपका पुर्नजन्म मिल चुका है।

किस प्रकार आपने यह पुर्न जन्म प्राप्त किया? आप जानते हैं कि श्री गणेश अत्यन्त शक्तिशाली हैं और ईसा ने कहा था कि होली घोस्ट (आदि शक्ति) के विरुद्ध कोई कुछ कहेगा तो मैं उसे सहन नहीं करूगां। ईसा के विरुद्ध भी कोई गलत बात कहेगा तो मैं इसे सहन नहीं करूंगी। इस मामले में मुझे यह देखना होगा कि इस प्रकार के शैतान लोगों का पूर्ण विनाश हो जाए। ईसा के जन्म दिन के इस शुभ अवसर पर मैं कहती हूँ कि ईसा और श्री गणेश एक ही तत्व से बने थे। ईसा विवेक थे और विवेक के स्रोत थे। तीन साढ़े तीन वर्ष कार्य करने के पश्चात् उन्हें जीवित नहीं रहने दिया गया। परन्तु उन्होंने जो भी कुछ इस समय में बताया वह पूर्णतया ठीक एवं विवेक पूर्ण था। चाहे लोगों ने इसे भ्रष्ट करने की कोशिश की है, फिर भी बाइबल में बहुत सा सत्य बाकी है। उन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों को सत्य के बारे में बताने में लगा दिया। परमात्मा के बारे में इतना स्पष्ट रूप से बताने वाले वे पहले अवतरण थे। इसके बारे में आपको स्पष्ट रूप से जान लेना है।

तप के क्षेत्र में दो लोग है – एक बुद्ध है और दूसरे महावीर। बुद्ध और महावीर का अवतरण उस वक्त हुआ था जब कर्मकाण्ड वास्तविकता का स्थान लेने लगा था। तो उन्होंने कहा कि हम परमात्मा की बात नहीं करेगें। हम केवल चैतन्य की बात करेगें। सभी ने ऐसा किया। यहां तक कि राजा जनक के गुरू अष्टवक्र ने भी चैतन्य लहरियों की बात की। गुरू नानक ने भी यही किया। नामदेव जब औरिया गये तो उन्होंने कहा कि हम हरि की बात नहीं करते। अच्छा होगा कि हम सबसे पहले चैतन्य की बात करें। परमात्मा तक पहुंचने के लिए व्यक्ति परम चैतन्य तक पहुँच सकता है। केवल ईसा मसीह ने ही सर्वशक्तिमान परमात्मा की बात की। ईसा मसीह अत्यन्त बहादुर और निर्भीक थे। जैसे श्रीकृष्ण और श्रीराम के बचपन के वर्णन हमें मिलते हैं उस प्रकार ईसा मसीह के बचपन का वर्णन कही नहीं किया गया। यह खेद जनक बात है। केवल एक वर्णन मिलता है जब वह पारसी के साथ बहस कर रहे थे तो वे लोग उनकी चतुराई और विवेक बुद्धि को देखकर आश्चर्यचकित थे।

लोगों ने यद्यपि माँ 'मैरी' का सम्मान नहीं किया फिर भी वे उनके प्रति नतमस्तक थे। उन्होंने कहा कि यदि वे देवी नहीं होती तो कैसे उनकी कोख से ईसा का जन्म होता। तो लोगों ने उन्हें गौरी (वर्जिन) कह कर पुकारा। तब यह कुमारी चर्चों में तथा अन्यत्र स्थान ग्रहण करने लगी। लोग उन्हें देवी मानने लगे। उन्हें माँ की पदवी देने लगे। लोगों ने यह मान्यता उन्हें दी। चर्चों तथा ईसाई धर्म के नहीं। हम जानते है कि वे महालक्ष्मी थी और महालक्ष्मी के रूप मे ही उनकी पूजा करते है। वे राधा थी। राधा का भी अण्डाकार का एक पुत्र था। अडें का आधा भाग ईसा मसीह थे और आधा श्रीगणेश। परन्तु उत्पन्न होते ही यह बालक अपने पिता के लिए रोने लगा। श्रीकृष्ण पिता था और हाथ की पहली अंगुली विशुद्धि की उंगली है। ईसा मसीह सदा अपने हाथ परम पिता परमात्मा की तरफ 'V' चिन्ह की तरह से रखते थे। पहली अंगुली श्रीकृष्ण की है और मध्यम श्रीविष्णु की। राधा माँ थी – 'रा' अर्थात् शक्ति और 'धा' अर्थात् धारण करने वाला। माँ मैरी ने ही उन्हें येशु कह कर बुलाया। येशु यशोदा भाषा का शब्द है। बाईबल के मराठी अनुवाद में भी यिशु ही लिखा है कि मां यशोदा से येशु या जीजस बना। जीसस या येशु और क्राइस्ट या क्रिष्ट नामों से बुलाकर मां मैरी ने हमारे लिए यह समझना अत्यन्त सुगम कर दिया है कि जीसस के कृष्ण से कितने समीपी ही समबन्ध थे। श्रीकृष्ण भारत में अवतरित हुए क्योंकि वे इतने नग्न व्यक्ति थे कि मर्यादा और धर्म विहीन अमेरिका के लोगों के बीच अवतरित होना उनके लिए संभव नहीं था। अमेरिका के लोग अत्यन्त अधर्मी है। अतः ईसासम पूर्णतः पवित्र विवेकशील व्यक्ति, जिसे लीला पर कोई विश्वास न था, ही वहां अवतरण ले सकता था। श्रीराम की अनुशासनबद्धता को दूर करने के लिए श्रीकृष्ण ने लीला पर बल दिया। परन्तु ईसा ने ऐसा नहीं कहा। इसके बावजूद भी सभी ईसाई लोग कहते हैं कि यह सब लीला है। सारे अधर्म, बुराइयों को लीला कहते हुए वे कहते है कि हम अबोध है। यह तर्क कितना मूर्खतापूर्ण है। आत्मघाती एवं विवेकहीन तर्क।

हम भारतीय लोगों को धर्म का पूरा विचार है। हम जानते हैं कि ठीक क्या है और गलत क्या है। परन्तु उन देशों के ईसाई सहजयोगियों को मैं अधिक श्रेय दूंगी जिन्हें कुण्डलिनी के बारे कोई ज्ञान न था। फिर भी उन्होंने कठोर परिश्रम किया और महान सहजयोगी बने। यह परमात्मा का आशीर्वाद है। क्योंकि वे निष्कपट एवं सच्चे थे। ईसा मसीह उन्हें सहजयोग में लाए। उनके बिना यह सम्भव न होता। भारत में श्रीगणेश एक प्रतीक मात्र है, परन्तु वहाँ वे अवतरित हुए। ईसा ने लोगों को बताया कि धर्म क्या है और उन्हें किसका अनुसरण करना चाहिए। फिर भी वे धन लोलुप लोग हैं। परमात्मा के नाम में उन्होंने कैसे-कैसे कार्य किए हैं। जहां वे जन्मे वह एक अतिप्रतीकात्मक बात थी। एक नाद में वे जन्में, जिसमें बहुत सारा घास इकट्ठा पड़ा था। पशु वहां पर थे। एक गरीब व्यक्ति की तरह, एक ऐसे स्थान पर जो कि मानवीय स्तर से बहुत नीचा था, उन्होंने जन्म लिया। यह केवल हमें बताने के लिए था कि अवतरित होने के लिए महल या बड़े स्थानों की आवश्यकता नहीं। यदि आप पवित्र हैं तो कहीं भी जन्म ले सकते हैं। इतना महान व्यक्तित्व ऐसे स्थान पर उत्पन्न हुआ। परन्तु अब वहां पर सभी कुछ इसके विपरीत हो रहा है। वहां के लोग अत्यंत भौतिकता वादी हैं, धन संचालित है और कमाये हुए धन से अपना विनाश कर रहे हैं। पश्चिमी देशों में लोगों में संतुलन विवेक नहीं है। और हम भी उनका अनुसरण

कर रहे हैं। उनकी विध्वंसक गतिविधियों का अनुसरण करके हम समझते है कि हम काफी उन्नत है। विनाश की ओर उन्नत।

अपने बच्चे तथा सम्बंधियों के प्रति हमें बहुत सावधान होना है ताकि परमात्मा के नाम पर बताई गई गंदी बातों को हम अपना न लें।इसके बावजूद भी सहजयोगियों का एक बहुत बड़ा समूह यहां है। वे आशिर्वादित लोग हैं और जानते हैं कि देवत्व क्या है। ईसा क्या है? चाहे आपका जन्म हिन्दु परिवार में हुआ हो या कहीं और, ईसा हम सबसे सम्बन्धित हैं। ईसा शाश्वत है। वे पूरे ब्रह्माण्ड। ऐसा देवीमहात्मय् में वर्णन किया गया है। ईसा के अनुयायियों का हमें मजाक नहीं करना चाहिए, ईसा मसीह की भी हमें उतने ही स्नेह, श्रदा एवं समर्पण से पूजा करनी चाहिए जैसे हम श्री गणेश की करते हैं। मैं नहीं समझती कि इसाई लोगों को ईसा मसीह में विश्वास है। परन्तु आत्म साक्षात्कारी होने के कारण सहजयोगियों का विश्वास कार्य करता है। आपको स्वयं में, सहज योग में तथा जीवन-यापन में अपने ढंग में विश्वास होना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं हो जाता तब तक आप स्वयं को सहजयोगी नहीं कह सकते। अब भी बहुत से लोग है जो पर्रिधि रेखा पर हैं, जो सहज योग को पूर्णतः नहीं समझते हैं। केवल बुद्धि से समझते है फिर भी परमात्मा के गहन प्रेम में गोते लगा रहे है। आपको चाहिए कि वह प्रेम दूसरे लोगो को भी दें। अभी भी कुछ लोगों के लिए भौतिकता का बहुत महत्व है। मेरा कहने से अभिप्राय है कि वे अब भी गलत ढंग से धनार्जन करना चाहते हैं। कुछ अन्य अपने बच्चों से लिप्त हो जाते हैं। यह लिप्सा गलत है। ईसा मसीह ने कभी ऐसा नहीं चाहा। हमें यह समझना है और ईसा मसीह का सम्मान करना है।

भौतिकतावादी विचारों से हमें छुटकारा पाना होगा। मैं नहीं कहती कि आप हिमालय में चले जाएं, सन्यास ले लें, या बुद्ध की तरह से अपने बच्चों को त्याग दें। परन्तु आप में निर्लिप्सा तो होनी ही चाहिए। आप सब इस पृथ्वी पर है फिर भी आपको निर्लिप्सा विकसित करनी होगीं। आरम्भ में आप जब सहज योग में आते हैं कि "मेरे पिता बीमार है, मेरी मां बीमार।" शुरु-शुरु में यह ठीक है, परन्तु अब नहीं। सहजयोग की गति अब बहुत तेज है। और बहुत से लोग पीछे रह जाएंगे। अतः सावधान रहें। इन भौतिकतावादी विचारों में न फंसे। विशेषकर भारतीय सहजयोगी, वे आश्रमों में रहना पसंद नहीं करते। भारतीय चाहते हैं कि उनके अपने घर हों जहां वे अपनी पत्नियों पर रोब झाड़ सकें और स्वादिष्ट प्रकार के खाने खा सके। मेरे विचार में इसी कारण भारतीय लोगों को व्रत रखने के लिए कहा गया। ताकि वे जिव्हा के स्वाद से छुटकारा पा सकें। व्रत रख कर भी वे खाने के विषय में सोचते हैं। ऐसे व्रत का क्या लाभ है? ईसा मसीह ने चालीस दिन तक व्रत रखा और जब शैतान ने उनका दिल ललचाने का प्रयत्न किया तो उन्होंने उसकी अवज्ञा कर दी।

भौतिकता भिन्न-भिन्न तरीको से कार्य करती है। पश्चिमी देशों में लोग कहते हैं "मेरा घर, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे"। पूर्व में यह "मैं किस प्रकार का खाना खाता हूँ, मेरा घर और परिवार कैसा होना चाहिए"?

ये सारी चीजें अब भी बनी हुई हैं। आपका उत्थान ज्यों-ज्यों सूक्ष्म होता जा रहा है। वैसे-वैसे यह चीजें भी सूक्ष्म हो रही हैं और आपको पकड़े हुए है। मैं ऐसे सहजयोगियों को भी जानती हूँ जो सहजयोग को व्यापार बनाना चाहते है। क्या आप स्वयं को काबू नहीं कर सकते? ऐसा करना अति सुगम है। ईसा मसीह ने ऐसा किया। आप यहां उनकी पूजा करने के लिए आये हैं। इन चीजों को काबू करने का प्रयत्न करें। यह बहुत आवश्यक है। आप कहीं भी रह सकते हैं। जैसे मेरी कोई आवश्यकता नहीं है, मेरा शरीर कुछ नहीं मांगता। इसी कारण मुझे कभी थकान नहीं होती। यहां मैं आपके साथ रहती हूँ। कहीं भी मैं सो सकती हूँ। एक बार मैंने पुणे से लेकर हैदराबाद तक रेलगाड़ी में यात्रा की। बहुत धक्के लग रहे थे परन्तु मुझे ऐसे लगा जैसे मैं एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर जा रही हूँ। कोई दूसरा व्यक्ति होता तो इन धक्कों के कारण नाराज हो जाता। परन्तु, इसके विपरीत मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। अतः मेरी प्रक्रिया बहुत भिन्न थी। जब भी कोई समस्या होती है तो मैं निर्विचार हो जाती हूँ और एक गहन शक्ति प्रवाहित होने लगती है। निर्लिप्त हो कर आप भी इसे प्राप्त कर सकते हैं।

मेरे भी बच्चे हैं, नाती नातिने हैं। मैं उन्हें कभी फोन नहीं करती। वे मुझे फोन करते हैं। मै अपने पति को भी कभी फोन नहीं करती। टेलीफोन करना समय खराब करना मात्र है। मेरे अन्दर एक टेलीफोन है और मैं जानती हूँ कि आप सब ठीक हैं। परन्तु जब तक आप निर्लिप्ता की उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते यह कार्य कठिन है। मैं जानती हूँ कि कुछ सहजयोगी एक दम हिंसक हो जाते हैं और दूसरों को चोट पहुंचाने लगते हैं। आप जानते हैं मैं अपने बच्चों पर कभी हाथ नहीं उठाती। ऐसा करने की आज्ञा नहीं है। किसी भी व्यक्ति को हाथ नहीं उठाना चाहिए और न ही किसी को छूना चाहिए। आपको न तो नाराज होना है और न ही चिल्लाना है। अन्यथा आपको पता भी नहीं लगेगा और आपका पतन हो जायेगा। पूर्णतः शान्त एवं करुणामय बनें। परन्तु यदि आप अभी तक भी लिप्त हैं तो आप यह सब उल्टे सीधे कार्य करते है। अतः सावधान रहें। क्रोधित न हों। ऐसा कोई व्यक्ति यदि हो तो मुझे बताएं। ईसा की ओर देखें चर्च के समीप चीजे बेचने वालो पर वे नाराज थे। एक बड़ा हंटर लेकर उन्होंने उन्हें पीटा। पर वे तो ईसा मसीह थे। जिस समय उन्हें क्रूसारोपित किया गया उन्होंने कहा "हे परमात्मा, मेरे पिता कृपा करके इन्हें क्षमा कर दो क्योंकि यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं।"

यही सब कुछ हमें ईसा मसीह के और उनके चरित्र के बारे में जानना है। वे कितने क्षमाशील तथा प्रेममय थे? किस प्रकार से उन्होंने लोगों की देखभाल की? और मोक्ष प्राप्ति के लिए उनकी सहायता की। आराजकता तथा अव्यवस्था के उन दिनों में उन्होंने "सत्य, आत्मा एवं उत्थान" की बातें कीं। जिन लोगों से उन्होंने बातचीत की वे सब अन्ध (ना समझ थे) फिर भी उन्होंने उन्हें सब कुछ बताया। बाईबल में बहुत सी कथाएं हैं जिनमें से एक यह है कि पुर्न जन्म के समय आपके शरीर कब से बाहर आएंगे। यह बात केवल इसाईयों के लिए ही नहीं है बल्कि मुसलमानों और यहूदियों के लिए भी है। इसके विषय में सोचें – इतने वर्षो के बाद कब्र में क्या बचता है? थोड़ी सी हड्डियां और यदि यह हड्डियाँ बाहर आ भी जाएं तो किस प्रकार आप इन्हें आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं? इसके बारे में सोचें। ये मात्र कथा है जो कि तर्किक रुप से सम्भव नहीं। नल दम्पति आख्यान में स्पष्ट कहा गया है कि ये सभी साधक जो परमात्मा को पर्वतों में खोज रहे हैं ये सब कलयुग में पुर्नजन्म लेगें और उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया जाएगा। जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिल गया है उन्हें स्वयं को इसमें स्थापित करना होगा। उनकी कुण्डलिनी जागृत हो जाएंगी और यह बात तर्क संगत है। आज हम लोग यही कार्य कर रहें हैं।

जनसंख्या विस्फोट भी इसी कारण से है। परन्तु मैं नहीं जानती कि इनमें से कितने लोग आत्मसाक्षात्कार को पा सकेंगे। जिन लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है उन्हें चाहिए कि स्वयं को स्थापित करें। परन्तु उनमें भी सूक्षम प्रकार की लिप्सा दिखाई पड़ती है। अतः आप लोगों को चाहिए कि ईसा मसीह के गुणों के सम्मुख स्वयं को समर्पित कर दें। उनके गुण अत्यंत गहन हैं। और उनका महानतम गुण यह है कि वे (आदि शक्ति) परम-चैतन्य के विरुद्ध कोई भी बात सहन नहीं कर सकते।

सहजयोगी देते हुए भी यदि आप दुर्व्यवहार करते हैं ता हो सकता है कि ईसा मसीह कुछ सीमा तक आपको क्षमा कर दें पर हमें लोगों को बताना है कि सहजयोग मार्ग को अपनाएं। हिंसक तथा अभद्र न बनें। मैं जब यह सुनती हूँ कि सहजयोग में भी लोग उग्र हैं तो मुझे बहुत दुःख होता है। आपको चाहिए कि जिगर का इलाज करें। उग्र स्वभाव के लोगों को चाहिए कि वो दो दिनों तक व्रत रखें और स्वयं को दंडित करें। क्रोध बहुत ही बुरा है। श्रीकृष्ण ने कहा है कि क्रोध से ही सारी बुराइयां शुरू होती हैं। अतः अपने क्रोध को हमें काबू करना है और याद रखना है कि ईसा मसीह क्षमा का अवतार थे।

आज हम उनकी पूजा कर रहे हैं। जिन लोगों ने उन्हें क्रूसारोपित किया उन रोमन लोगों को भी उन्होंने क्षमा कर दिया। रोमन अधिकारियों ने उन्हें क्रूसारोपित किया था। इस प्रकार के दृष्टिकोण के कारण लोगों ने उनसे घृणा की, उन्हें दुख दिया और सताया। जब यहूदियों में प्रक्रिया हुई तो उन्होंने भी ऐसा ही किया। जिस न्यायाधिकारी ने उन्हें क्रूसारोपित किया उसने भी स्वयं निर्णय न दे कर लोगों से यह बात कहलवायी। यह सब यहूदियों को अभिशापित करने के लिए था।

परमात्मा का शुक्र है कि, आज बहुत से यहूदी सहजयोग में हैं और इज्राइल में बहुत से सहजयोग केन्द्र हैं। ईरान से अमेरिका आये हुए बहुत से लोग हैं जो यहूदी और मुस्लिम हैं जो अब सहजयोगी बन गए हैं। मुझे बताया गया है कि तुर्की और भारत के सूफी लोग भी सहजयोग में आ रहे हैं। इस प्रकार सब का कल्याण होगा। हमें समझना होगा कि ईसा मसीह कैसे थे। उनका जीवन कैसा था और किस प्रकार उन्होंने लोगों को प्रेम किया। वे विश्व में क्रूसारोपित होने के लिए आए। इस बात को वे जानते थे और उन्होंने ऐसा किया। परन्तु लोगों ने उनका जो चित्र प्रस्तुत किया है वह गलत है। वे अत्यन्त स्वस्थ, वजनदार एवं लम्बे कद के थे। उन्होंने क्रूस को उठाना था। जिन लोगों ने उन्हें तपेदिक के मरीज की तरह दुर्बल चित्रित किया है उन्हें समझना चाहिए कि यदि स्वयं उन्हें क्रूस उठाना पड़े तो क्या वे उठा सकेंगे? इस प्रकार ईसा मसीह के व्यक्तित्व को हानि पहुंचाने के लिए और उनका चरित्र हनन करने के लिए लोगों ने यह सभी कुछ किया। परन्तु सहजयोगी होने के नाते आपको चाहिए कि सारे सत्य को जानें। उनके प्रति पूर्ण सम्मान और उनमें पूर्ण श्रद्धा बनाए रखें। वे, श्री गणेश की तरह, आपके बड़े भाई हैं। बड़े भाई के रूप में ही वे अवतरित होते हैं। हर दुख एवं परेशानी में वे आपकी देखभाल करते हैं। हर तरह से वे हमारी मदद करते रहेंगे। लेकिन इसका एकमात्र रास्ता यह है कि उनके गुणों के सम्मुख हम समर्पण करें और क्षमाशील बन जाएं। उनके यही गुण हमें आत्मसात करने हैं। परमात्मा आपको आशीर्वाद करें।

श्री माता जी की सहजयोगियों से बातचीत
मद्रास 17.1.94 (सारांश)

आज हम शब्द जाल में खो गए हैं। हम मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं, कोई शैव है, और कोई विष्णवी। ये सारी बातें हमारे लिए इसलिए महत्वपूर्ण थीं क्योंकि हमने सोचा था कि इन विधियों से हम अपने अन्तिम लक्ष्य, मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे। इस प्रकार मेरे विचार से भारतीय अत्यंत चुस्त एवं मूलभूत रूप से आध्यात्मिक हैं। वे जानते हैं कि अच्छा क्या है, और बुरा क्या है। धर्म अधर्म को भी वे जानते हैं। आध्यात्मिक जीवन के वे कार्य करते हैं। परन्तु अपने हृदय में वे जानते हैं कि ऐसा करना अनुचित है। पर वे लाचार हैं। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे पूर्वज महान दृष्टा, संत एवं अवतरण थे जिन्होंने हमारे आध्यात्मिक उत्थान के लिए बहुत समय लगाया। हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त है। हमारे पूर्वजों के लिए भौतिक जीवन का बहुत महत्व नहीं था। दक्षिण में मुझे लगता है कि लोग धर्म में बहुत ही गहन उतरे हुए हैं। मैं शालीवाहन के बारे में पढ़ती हूँ जिनकी भेंट कश्मीर में एक बार ईसा मसीह से हुई ईसा मसीह ने उन्हें बताया कि "मैं मलेच्छों (मल + इच्छा) के देशों से आया हूँ अर्थात जहां के लोग मल की इच्छा करते हैं" उनकी इच्छा मल की है पवित्रता की नहीं। और मैं यहां इसलिए आया हूँ क्योंकि आप लोग पूर्णतया निर्मल हैं। तो शालीवाहन ने उनसे कहा "आप यहां क्यों आना चाहते हैं, आप को तो जा कर मलेच्छ लोगों के हित के लिए कार्य करना चाहिए।" आज भी हम भिन्न प्रकार के लोग हैं। इस घोर कलयुग में भी कम से कम 70 प्रतिशत लोग परमात्मा में विश्वास करते हैं। परमात्मा के प्रति उनकी श्रद्धा है तथा उसका उन्हें भय है।

ये जो भावना हमारे अन्दर है यह मात्र एक भय है। किसी अनजानी शक्ति का भय। हम नहीं जानते कि सर्वशक्तिमान परमात्मा करूणा एवं प्रेम के सागर हैं। हम मानवों को चाहिए कि परमात्मा को जानने की अवस्था को प्राप्त करें। हम परमात्मा को जानते नहीं है। हम स्वयं को भी नहीं जानते। पहले हमें स्वयं को जानना होगा इसके उपरान्त ही हम परमात्मा को जान जाएंगे। दक्षिण भारत में मुझे अत्याधिक कर्मकांड नजर आया है। मैं आश्चर्यचकित थी कि कितने हृदय पूर्वक लोग सभी कुछ कर रहे हैं। पर वे ऐसा करने का कारण नहीं जानते। उनकी यह अन्ध श्रद्धा है, अन्ध श्रद्धा उन्हें कहीं भी नहीं ले जाएगी। मैं सोचा करती थी कि कब मैं उन्हें यह बता पाऊंगी कि आपको इस अन्ध श्रद्धा से ऊपर उठना है। श्रद्धा आप में होनी चाहिए पर श्रद्धा तो ज्ञान सम्पन्न भक्ति होती है। बिना ज्ञान सम्पन्नता (बोध) के भक्ति अर्थ-हीन है। जैसे यह माइक्रोफोन यदि अपने स्रोत से न जुड़ा हो तो यह अर्थहीन है। अपनी भक्ति को जब तक हम परमात्मा के दैवी प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति से नहीं जोड़ लेते तब तक भक्ति अर्थहीन है। अतः सर्वसाधारण बात यह है कि योग घटित होना आवश्यक है। चाहे आपको शास्त्रों और वेदों का ज्ञान हो, बिना योग के सब अर्थहीन है।

जैसे आपको यदि सिर दर्द हो और डाक्टर कोई औषधी आपको लिख कर दे तो उसे खाने की अपेक्षा आप उसका नाम उच्चारण करते रहें। कब आप इस औषधी को लेंगे? बिना आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किये आप अपने जन्म सिद्ध अधिकार को किसी भी तरह से प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि मिथ्या विचारों के गहन अज्ञानान्धकार में हम धंस चुके हैं। यह अज्ञान एक गहन खाई है। जिससे निकलना अत्यंत दुश्कर है। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जिन्होंने ढेरों पुस्तकें पढ़ी हैं। कुछ लोग एक लाख मन्त्रोच्चारण करते हैं, व्रत करते हैं। परन्तु उन्हें कोई लाभ नहीं होता। उनका स्वभाव बहुत ही उग्र है, और उनके हृदय में आनन्द बिल्कुल नहीं है। परिवार को त्याग कर वे चले जाते हैं और सोचते हैं कि उन्होंने महान त्याग किया है। परामात्मा इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण बातें नहीं चाहते। परमात्मा जो कि आपके पिता हैं, अति करूणा एवं प्रेम मय हैं, क्यों आपको दुखी देखना चाहेंगे?

आप दुख क्यों उठाएं? मैं नहीं समझ सकती कि दुख उठाने से किस प्रकार आप मोक्ष को प्राप्त कर पाएंगे? जैसे कबीरदास जी ने कहा है कि व्रत करने से यदि मोक्ष प्राप्त होता तो भारत के केवल दरिद्र लोग ही मोक्ष को प्राप्त कर पाते। सिर मुंडाने से यदि मोक्ष प्राप्त होता तो भेडें, जिनकी ऊन हर साल उतार ली जाती है, को ही मोक्ष प्राप्त होता। इन लोगों ने इन सब कर्म काण्डों का उपहास करके आपको यह बताने की चेष्टा की है कि इन बाह्य कार्यों से आपको कोई लाभ न होगा। निसंदेह, आप ये सब कर्मकाण्ड बड़ी तत्परता से करते हैं क्यों कि आप आत्मसाक्षात्कार एवं मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं। माँ होने के नाते मैं आपको बताती हूँ कि आपको यह सब कर्म काण्ड नहीं करने हैं। कृपया ऐसा न करें। माँ को यदि आपने सताना हो तो आप कहते हैं कि मैं खाना नहीं खाऊंगा। ऐसा आप क्यों करना चाहते हैं? इसकी कोई आवश्यकता नहीं। भोजन को इतना महत्व देना अनावश्यक है। प्रातः चार बजे उठ कर मन्त्रोच्चारण द्वारा आपका पूरे घर को सिर पर उठा लेना कहां तक उचित है?

इसके अतिरिक्त झूठे गुरुओं का भी प्रभाव है। मद्रास इनसे भरा पड़ा है। हर व्यक्ति किसी गुरु का दास है। कलकत्ता का तो और भी बुरा हाल है। हर व्यक्ति ने किसी न किसी गुरू से दीक्षा ले रखी है। कुगुरुओं या तान्त्रिकों के चक्कर में आप आ जाते हैं तो आप समृद्ध नहीं हो सकते। लक्ष्मी तत्व बाहर चला जाता है। और ऐसा होने पर निर्धनता पीछा नहीं छोड़ती। अतः इन कुगुरुओं से पीछा छुड़ाएं। पूर्ण भारत वर्ष इन से भरा पड़ा है। परन्तु यहां के लोग इतने सीधे हैं कि इनकी पूजा किये चले जा रहे हैं।

जिस प्रकार मुसलमान लोग जहाद करते हैं उसी प्रकार हम भी अपने विरूद्ध जहाद कर रहे हैं। खाना मत खाइए, यह मत कीजिए, वह मत कीजिये, इस प्रकार अपने जीवन के पीछे पड़े हैं और अपनी हत्या कर रहे हैं परमात्मा ने इस विश्व की सृष्टि आपके सुख एवं आनन्द के लिए की है। इस प्रकार के नर्क में ही यदि आपने रहना है तो परमात्मा ने संसार को क्यों बनाया?

सहजयोग में आप अपने व्यक्तित्व को पहचानते हैं। आप समझ जाते हैं कि आप कितने गरिमामय है अपने स्रोत से जुड़ने के बाद आप अपनी शक्तियों को जान जाते हैं। आपको समझ आ जाता है कि आपके अन्दर कितना सौन्दर्य है और आप अपना सम्मान करने लगते हैं। आपमें अहम् नहीं आता परन्तु अपने विषय में आप उचित आंकलन करने लगते हैं।

मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि यहां पर बहुत से लोग सहजयोग में है और सहजयोग को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। निसंदेह सहजयोग रोग दूर करता है इससे बहुत से लोग रोग-मुक्त हुए। इसके अतिरिक्त यह आपको मानसिक शान्ति प्रदान करता है। भावनात्मक रूप में भी आप अत्यंत संतुलित व्यक्ति बन जाते हैं, पर सर्वोपरि, आपमें दूसरों को आत्मसाक्षात्कार देने की शक्ति आ जाती हैं। पहले आप निर्विचार समाधि को प्राप्त करते हैं और फिर निर्विकल्प समाधि प्राप्त करते हैं। स्रोत से जुड़ते ही आप को यह सब वरदान प्राप्त हो जाते हैं। बंगलौर का एक सहजयोगी मुझे बता रहा था कि वह ऊतक जीवाणु समूह (टिशू कल्चर)कर रहा है जो कि केवल पचास प्रतिशत ही सफल होता है। परन्तु मैं एक सहजयोगी हूँ। मैं यहां खड़ा हो कर चैतन्य लहरियां देता हूँ और चैतन्य मेरी बोतलों में बहने लगता है और मुझे शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त होती है। वह एक किसान है जो अंग्रेजी भाषा तक नहीं जानता। वह कहता है कि श्री माता जी "मेरे अन्दर ऐसा ज्ञान है, जिसे मैं अनुभव कर सकता हूँ। इस चीज को हमें जानना है। यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि हम साधारण मानव नहीं है। सर्वप्रथम आपको इस कार्यक्रम में उपस्थित होना होगा क्योंकि आप जिज्ञासु हैं। आप विशिष्ट मानव हैं। तब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है और अपनी सभी शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। इसके लिए पी.एच.डी. होना आवश्यक नहीं, बहुत अधिक सफल व्यक्ति होना भी आवश्यक नहीं। अफसर, मंत्री आदि लोग सर्वसाधारण विवेक को खो देते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार देना बहुत कठिन हो जाता है। स्वयं को बहुत सफल मानने वाले लोगों को कभी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं होगा। शुद्ध इच्छा के बिना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हो सकता। यह इतनी विशेष चीज है कि इसमें सभी कुछ वास्तविक है। छोटे-छोटे बच्चे आपको बता सकते हैं कि आपको क्या समस्या है और आपका कौन सा चक्र खराब है। यह इतनी महान खोज है, इसका हम अन्दाज नहीं लगा सकते, सम्भवतः अपने अध्यात्म विवेक के अभाव के कारण। रूस में जब मैं गई तो लैनिन ग्राड के प्राचीनतम विश्वविद्यालय, सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में मुझे एक बहुत बड़ा इनाम दिया। विश्वविद्यालय के दस सदस्यों में उन्होंने मुझे भी स्थान दिया। इनाम को देख कर मैंने कहा कि "मैं तो मात्र घरेलू स्त्री हूँ। मैं कोई वैज्ञानिक नहीं।" इस इनाम को पाने वालों में से एनस्टाइन भी थे। यही इनाम एनस्टाइन को भी दिया गया था। वे कहने लगे कि "एनस्टाइन ने क्या किया है? उसने केवल भौतिक पक्ष को ही सम्भाला है। एनस्टाइन ने तो केवल भौतिक पदार्थ पर ही कार्य किया है, परन्तु आपने तो जीवित मानव पर कार्य किया है।"

सारे कार्य फलीभूत होंगे इस प्रकार के अन्धेरे से निकलकर आप सब प्रकाश में आएं स्वयं चीजों को देखें। आप क्या हैं। इस देश में जन्म लेना ही एक विशेष बात है। यह इतना बड़ा वरदान है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। इस देश जैसी भूमि आपको पूरे विश्व में नहीं मिल सकती परन्तु आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किये बिना आप इसका मूल्यांकन नहीं कर सकते। इसी लिए मैं चाहती हूँ कि आप यह समझें कि आत्मसाक्षात्कार के रूप में आपने जीवन में बहुत बड़ा वरदान पा लिया है। यह वास्तविकता है, अपनी अंगुलियों के छोरों पर आप किसी को, अपने और अन्य लोगों के चक्रों के विषय में जान सकते हैं।

यह ऐसा वरदान है। और मैं प्रार्थना करूंगी कि दूसरों को आत्म साक्षात्कार देने के लिए इसका उपयोग करें। यही महानतम कार्य है जो आपने करना है। और तब आप विश्वव्यापक समूह, सहजयोग जीवन संस्था का एक हिस्सा बन जाएंगे। पूरे विश्व में आपके मित्र होंगे, पूरे विश्व में लोग आपको जान जाएंगे। एक सहजयोगी होने के नाते आपको यह जानना है कि आपने सहजरीती रिवाज और सम्बन्धों का सम्मान करना है। कुछ करने या न करने के लिए कोई आपसे न कहेगा। परन्तु चित्त प्रकाशित होने के कारण आप स्वयं के गुरू बन जाएंगे परमात्मा आपको धन्य करे।

प्र. मानव अस्तित्व का क्या कारण है?

ऊ. परमात्मा के उपकरण बनने और परमात्मा के आशीर्वाद का आनन्द उठाने के लिए।

श्री शिवरात्री पूजा

परम पूज्यमाता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)
(दिल्ली) 14-3-1994

आज हम सदाशिव की पूजा करने वाले हैं। सदा शिव और शिव में यह अन्तर है कि सदाशिव सर्वशक्तिमान परमात्मा है और वे आदि शक्ति की लीला के लेखक हैं। सदाशिव और आदिशक्ति का सम्मिश्रण ऐसा है जैसे चांद और चांदनी का या सूर्य और उसकी धूप का। मानवीय सम्बन्धों या मानवीय विवाहों में हमें ऐसा दिखाई नहीं पड़ता। श्री सदाशिव की इच्छा से आदि शक्ति जो भी कुछ सृष्टि कर रही है श्री सदाशिव इसे देख रहे हैं और इसके साक्षी हैं। पूरे ब्रह्माण्ड एवं पृथ्वी मां को वे साक्षी रूप में देखते हैं। साक्षी भाव उनकी शक्ति है। 'आदि शक्ति' की शक्ति, अतः सर्वव्यापक शक्ति है।

सर्वशक्तिमान परमात्मा, 'आदि पिता' इच्छा शक्ति में अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति आदि मां के रूप में करते हैं। आदि माँ अपनी शक्ति की अभिव्यक्ति प्रेम के रूप में करती हैं। दोनों (आदि पिता और आदि माँ) के सम्बन्ध बहुत ही सूझ-बूझ से परिपूर्ण एवं गहन हैं। जब भी आदि पिता को यह लगता है कि आदि माँ की सृष्टि में कोई समस्या है या कुछ लोग उनके कार्य में विघ्न डाल रहे हैं तो वे उनका विनाश कर देते हैं। विध्वंस शक्ति के लिए वे जिम्मेदार हैं। मानव हृदयों में वे प्रतिबिम्बित हैं। सारी सृष्टि में उन्हीं की धड़कन है पर यह धड़कन आदि-मां की शक्ति है। और जो भी चीज आदि-शक्ति की योजनाओं के विरूद्ध जाए उसका वे विध्वंस करते हैं। आदि शक्ति प्रेम है। अपनी सृष्टि के अपराधों को वे क्षमा करती हैं तथा उसे प्रेम करती हैं। वे चाहती हैं कि उनकी सृष्टि समृद्ध हो तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करें वे चाहती हैं कि मानव उस अवस्था तक उन्नत हों जहाँ वह परमात्मा, सदाशिव के साम्राज्य में प्रवेश कर सकें, जहाँ पर आनन्द है जहाँ पर आनन्द, क्षमा एवं सुख शान्ति है। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब व्यक्ति में जिज्ञासा हो और उस स्थिति को प्राप्त करने की अन्तर्जात इच्छा हो। हमारे अन्दर यह इच्छा आदि माँ के प्रतिबिम्ब के रूप में प्रतिबिम्बित है। इस इच्छा के साथ-साथ मानव में सांसारिक इच्छाएं भी होती हैं जो उत्थान के विकास में बाधा डालती हैं। सहजयोग में सन्यास ले कर या घर का त्याग करके हमने कभी भी इन इच्छाओं को वश में करने का प्रयत्न नहीं किया।

सर्वप्रथम आपको आत्मा का प्रकाश प्राप्त हो जाता है। आत्मा सदाशिव का प्रतिबिम्ब है, यह जलती हुई उस मशाल की तरह है जो मार्ग दर्शन करती है। इस मार्ग पर आप स्वयं इतने बुद्धिमान हो जाते हैं कि आप स्वयं विवेक के प्रकाश में चलने लगते हैं। आत्मा के प्रकाश में हर विनाशकारी चीज को आप देख लेते हैं और कर्तव्य परायणता के प्रकाश में चलने लगते हैं। विध्वंसकता को आप त्यागने लगते हैं, किसी को आपको कुछ बताना नहीं पड़ता। आप स्वयं महसूस करते हैं कि यह कार्य गलत है और मुझे यह नहीं करना चाहिए। आजकल क्योंकि मानव भ्रम में फंस गया है अतः उसके बारे में यह मेरी अपनी सूझबूझ थी। मानव हर समय संघर्ष की स्थिति में है। यहाँ तक कि अपने अस्तित्व के लिए भी संघर्षरत है। ऐसी स्थिति में यदि सन्यास लेकर आप हिमालय पर चले जाते तो सभी कुछ असफल हो जाता। जनसाधारण के कल्याण के लिए यदि कुछ करना है तो मूलभूत रूप से कोई कार्य होना आवश्यक था और सौभाग्यवश मैं वह मार्ग खोज सकी जिसके द्वारा आपका अकुरण हो सके और आपको आत्मसाक्षात्कार मिल सके।

आज बहुत से लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है। उन्हें कुछ बातें समझ लेनी चाहिए। उनमें समर्पण की कमी है। आधुनिक सहजयोग की केवल एक शर्त है कि वास्तविकता में आपको समर्पण करना होगा। अपने मस्तिष्क या अन्य तरीकों के उपयोग से यदि आप सहजयोग को समझना चाहेंगे तो समझ नहीं पाएंगे। समर्पण करना ही होगा। इस्लाम समर्पण के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। इस्लाम का अर्थ है समर्पण। समर्पण के अभाव में परमात्मा के साम्राज्य में स्थापित होना असंभव है। समर्पण का अर्थ यह नहीं कि आप अपने परिवार बच्चों और घर का त्याग कर दें। इसका अर्थ है कि आप अपने अहँ एवं बंधनों का त्याग करें। उदाहरणार्थ मैं एक व्यक्ति से मिली जो बहुत कष्ट में था। मैंने उससे पूछा कि तुम्हारा गुरु कौन है? उसने गुरु का नाम बताया। मैंने कहा, "उसने तुम्हारा कोई हित नहीं किया। क्या तुम उसे छोड़ दोगे? क्या तुम उसे त्याग दोगे?" उसने कहा "कल"। मैंने पूछा "आज क्यों नहीं।" उसने कहा "आज"। लेकिन मैंने फोटो आदि फेंकने हैं और यह कार्य मैं कल सुबह करूंगा। उसने पूछा कि वह कौन-कौन सी वस्तुएं फेंके, मैंने उसे बताया कि जिन वस्तुओं से वह उस गुरू की पूजा करता था वे सारी फेंक दें। उसने वे सारी वस्तुएं समुद्र में फेंक दी और समुद्र से कहा। "मुझे खेद है। इस व्यक्ति के हाथों मैंने बहुत कष्ट उठाएं हैं कृपया आप कष्ट न उठाएं।" उसके अन्दर इस प्रकार का सूक्ष्म विवेक था। इस प्रकार से आप नहीं त्याग सकते, इनसे चिपके रहते हैं।

मैं बहुत से ऐसे लोगों को जानती हूँ जिन्हें अपने बन्धनों से

छुटकारा पाना बहुत कठिन लगता है। यह कार्य अहम् से मुक्ति पाने से भी अधिक कठिन है। हमारा पहला बन्धन यह है कि हम भारत में जन्में हैं। सहजयोग में आते ही लोग अपने देश, देशवासियों धर्म एवं ग्रन्थों की कमियों को देखना शुरू कर देते हैं और जान लेते हैं कि गलती क्या थी। कोई भी यह नहीं कहता कि "क्योंकि हम अंग्रेज, रूसी या भारतीय हैं अतः हम ही सर्वश्रेष्ठ हैं। वे तुरन्त जान लेते हैं कि रुकावट क्या है और यह लोग आत्मसाक्षात्कार को क्यों नहीं पा रहे। दूसरी ओर उन्हें उन लोगों पर बहुत दया आती है जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ। क्यों न हम उन्हें आत्मसाक्षात्कार देने का प्रयत्न करें।" प्रकाश के यह दो कार्य हैं। सर्वप्रथम आप जान लेते हैं कि प्रकाश है और आप प्रकाश बन गये हैं। अतः जहाँ भी आपका चित्त जाता है आप वास्तविकता देखने लगते हैं और तब आप समझ लेते हैं कि हमारे देश और समाज के कौन-कौन से बन्धन हैं। सारी त्रुटियों से वे घृणा करने लगते हैं।

पर इसके लिए समर्पण प्रथम आवश्यकता है। समर्पण से आपके अन्दर एक ऐसी स्थिति विकसित हो जाती है जो आन्तरिक रूप से सन्यासी बना देती है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी चीज आप पर प्रबल नहीं हो सकती। सन्यासी व्यक्ति सभी चीज़ों से ऊपर होता है। उसे कोई चीज पकड़ नहीं सकती। वस्तुओं को देखने मात्र से वह उन्हें जान जाता है। गलत काम वह नहीं करता। कहे या न कहे वह हर चीज को समझता है। वह इतना निर्लाप होता है कि अपनी निर्लिपता में ही वह जान जाता है कि गलत क्या है। अपने परिवार को वह देखने लगता है। दूसरे लोगों को वह देखने लगता है, गलतियों को वह देखने लगता है परन्तु किसी भी चीज से वह लिप्त नहीं होता। मैं टर्की में एक भद्र पुरुष से मिली। उसने मुझ से आत्मसाक्षात्कार मांगा। मुझे हैरानी हुई क्योंकि स्विटज़रलैंड में मुझे यह चीज दिखाई न दी थी। आत्म साक्षात्कार प्राप्त करते ही वह कहने लगा कि "मैं अब स्विटज़रलैंड वापस नहीं जाऊँगा"। यह इतना स्पष्ट है और यह प्रकाश वास्तव में आपको महान विवेक एवं संतुलन प्रदान करता है। मान लो कि आप चल रहे है परन्तु यदि आप सड़क को नहीं देख सकते तो आप गिर सकते है। परन्तु थोड़ा सा प्रकाश भी यदि हो तो आप देख सकते हैं। सहजयोग ने यही किया है। इसने आपको थोड़ा सा प्रकाश दे दिया है। इस थोड़े से प्रकाश के सहारे आप बहुत सी बुराइयों को त्याग सके हैं।

अहम् इसका दूसरा भाग है। मानव के लिए अहम् अति सूक्ष्म है कुछ लोगों में इतना सूक्ष्म अहम् होता है कि जरा सी बात से यह आसमान छूने लगता है। छोटी-छोटी चीजों के लिए वे नाराज हो जाते है या कोई ऐसा व्यक्ति वह खोज लेते है जिस पर वे शासन कर सकें। जब आप अहम् को देखने लगे हैं तो इस पर हंसे और सोचे कि मुझे में क्या कमी है। अहम् बन्धन जैसा नहीं है क्योंकि बन्धन बाहर से आते हैं और अहम् आन्तरिक है। किसी भी चीज से यह आ सकता है। मानव को सभी प्रकार की मूर्खता पूर्ण बातों का अहम् है। एक दिन मैं एक स्त्री से मिली जो इतनी घमंडी थी कि मुस्कराती तक न थी। मैंने पूछा कि इस स्त्री की क्या समस्या है? उन्होंने मुझे बताया कि यह गुड़ियाँ (डोल्स) बनाना जानती है जिसके कारण इसे इतना घमंड है। गुडियां तो कोई भी बना सकता है। व्यक्ति मूर्ख हो जाता है। घमंडी व्यक्ति की पहली पहचान है कि वह "मैं" ग्रस्त हो जाता है। "मैंने यह कार्य किया"। "मैं ऐसा हूँ"। ऐसी बाते कहते हुए उसे लज्जा भी नहीं आती। यहां तक कि वह पापमय जीवन व्यतीत करता है। ऐसे लोग पर स्त्री गमन और मदिरापान आदि के शौकीन होते है। इन बातों की वे शेखी बघारते हैं। घमंडी व्यक्ति के लिए लज्जा नाम की कोई चीज नहीं रह जाती। अपने मूर्खता पूर्ण कार्यों की वह डींगें मारता रहता है। और अपने किये को वह सदा उचित ठहराता है। मैंने एक व्यक्ति से पूछा "आपको इतना भयंकर हृदय घात हुआ है फिर भी आप शराब क्यों पीते हो? शराब पीना छोड़ दो" उसने यह कह कर अपने किये को उचित ठहराया कि "फलां चोटी का उद्योगपति ९५ वर्ष की आयु में भी शराब पीता है" "वह पीता है इसीलिए सफल है"। तो क्या वह शराब पीने के कारण ही कामयाब है? तनिक सी भी समझ नहीं है। आप देश के किसी ऐसे सफल व्यक्ति को देखते है जो शराब पीता है। पर शराब पीकर मरने वाले व्यक्ति कि स्थिति को नहीं देखते। कहीं भी ऐसे व्यक्ति की सराहाना नहीं होती जिसकी दस पत्नियां हों या जो शराब पीकर मर गया हो।

आधुनिक समय में यह अहम् फैल गया है। लोग कहने लगते है, "मुझे यह पसन्द है यह पसन्द नहीं"। यह पूर्ण विनाश के चिन्ह हैं क्योंकि अहम् महा मूर्ख है। जिस प्रकार के वेशभूषा लोग धारण करते है उसी से ही पता लगता है कि वे कितने मूर्ख हैं। कहते हैं "मुझे यह पसन्द है, इसमें क्या खराबी है"। किसी भी प्रकार से जब व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो वह इस मूर्खता को देख सकता। "यह मेरा अहम् बोल रहा है"। तब वह स्वयं पर हंसने लगते है और इसका मजाक बनाने लगते है। सहयोग में भी कुछ लोग हैं। कुछ लोगों से जब मैं पूछती हूँ कि वे जाकर कार्यक्रमों का आयोजन क्यों नहीं करते तो वे कहते है, "श्री माता जी इससे मेरा अहम् बढ़ जाएगा"। यदि आप अपने अहम् को देखते है तो वह कैसे बढ़ सकता है? मान लो आप किसी जलती हुई चीज को देख रहे है तो कैसे आप इससे स्वयं को जलने देगे? यह कहना कि 'सहजयोग के कार्य करने से मेरा अहम् बढ़ जाएगा' इस कार्य में छुटकारा पाने का अत्यन्त सूक्ष्म तरीका है।

विवाहों में भी यह आम बात है। लोग कहते है "श्री माता जी उस समय मैंने इस लड़की से शादी कर ली पर अब मुझे लगता है कि यह विवाह मुझे नहीं करना चाहिए था।" उस समय आपको क्या हुआ था? मुझे यह सारी बाते आपको बतानी पड़ रही है

क्योंकि इस मूर्खता पूर्ण अहम् की समस्याओं का मैं सामना करती रही हूँ। व्यक्ति को स्पष्ट देखना है कि किस प्रकार उसमें यह अहम् कार्यरत है और उसके पतन का कारण है। उत्थान की बात करते हुए हम उच्च जीवन की बात करते है। हमें सन्यासी सम बनना होगा, तालाब में से जन्में एक कमल की तरह से जिस पर पानी नहीं ठहर सकता। कमल के पत्तों पर भी पानी नहीं ठहर सकता। बिना गेरुए वस्त्र पहने या दिखावा किये हमें ऐसा बनना होगा। परन्तु अन्दर से एक निर्लिप्त चित होना चाहिए जो तुरन्त आपके अन्दर की समस्याओं को देख सके। सहजयोग के जरिये आप जानते हैं कि अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से किस प्रकार इस पर काबू पाया जा सकता है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए आपको शिव सा। साक्षी बनना होगा, शिव पूर्णतः निर्लिप्त हैं। यह निर्लिप्सा आपको शिव जैसा विवेक प्रदान करेगी।

सदा-शिव चुपचाप आदि शक्ति के कार्य को देखते हैं। उनमें अहम् विकसित नहीं होता है जो यह कहें कि "देखो अब मेरी इच्छा शक्ति क्या कर रही है।" वह मात्र दृष्टा है। परन्तु जब वे विनाश करन पर आते हैं तो देखते हैं कि यह भाग पूरी सृष्टि का विनाश कर देगा, तो वह तुरन्त ही उस भाग को समाप्त कर देते हैं। हमें भी इसी प्रकार करना है।

हमारा अपना जीवन बहुत बड़ा क्षेत्र है तो हमें सोचना चाहिए कि हम कैसे हों। मैंने लोगों को यह कहते सुना है "क्या हुआ, मैं एक सहजयोगी हूँ।" यदि आप सहजयोगी है तो हमें इस तरह से बात नहीं करनी चाहिए। हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक आपको यह कहना है कि मैं एक सहजयोगी हूँ।अपनी बातचीत में और व्यवहार में आपको अत्यंत नम्र व्यक्ति होना है। यदि ऐसा नहीं है तो इसका अर्थ ये है कि सहजयोग ने आपको दगना अहँ दिया है। आप जानते हैं कि शिव अपनी अबोधिता, सहजता और क्षमाशीलता के कारण प्रसिद्ध हैं। वे राक्षसों को भी क्षमा करते हैं। ये उनका गुण है। परन्तु जो भी व्यक्ति आदिशक्ति के विरूद्ध जाता है उसे वे क्षमा नहीं करते। यह गुण व्यक्ति को समझना चाहिए।

सर्मपण का अर्थ यह नहीं कि बाह्य वस्तुओं का समर्पण कर दें। समर्पण का अर्थ है कि स्वयं को पूर्णतः शुद्ध करें। पूर्णतया निर्लिप्त हो जाएं। निर्लिप्सा उत्थान का एक मात्र मार्ग है। कुछ लोग बीमार हो जाते हैं और इस बीमारी को बहुत ही बढ़ा चढ़ा कर कहते हैं। यदि आप सहजयोगी हैं तो मात्र अपने चित्त से देखें कि आप बीमार हैं। यह अत्यंत लीलामय एवं प्रमोदमय चित्त है। जब मैं यहां आई तो मुझे बुखार था परन्तु कोई विश्वास नहीं करता। विवाह में मैं बहुत थक गई थी लेकिन सब कहते थे "आप थके हुए नहीं लगते। इसी प्रकार जीवन की लीला करनी है। जीवन मात्र एक लीला है और ये लीला विवेक के प्रकाश में देखी जानी चाहिए कुछ भी इतना गंभीर नहीं है। सहजयोगियों के लिए कुछ भी इतना गंभीर नहीं है।

हमें बहुत सी बातें सीखनी है। जब हम शिव की पूजा करते है तो उनका गुणगान करते हैं। देवी, शिव और विष्णुजी के सहस्त्र नाम ले कर हम उनकी पूजा करते हैं। लेकिन लोगों के कितने नाम हो सकते हैं। वास्तव में पूजा में जब आप नाम लेते हैं तो वे जागृत हो जाते हैं। पूजा के बाद आपको ऐसा महसूस होता है। परन्तु आप उनका लाभ नहीं उठाते। जो भी लोग पूजा में आते हैं वे शक्ति को प्राप्त करते हैं। परन्तु ज्यों ही वे पूजा से निकलते हैं सब कुछ समाप्त हो जाता है।

समर्पण का एक अन्य पहलू भी है। यह मान लेना कि मैं एक सहजयोगी हूं और सारी शक्तियों को मैं अपने अन्दर आत्मसात कर सकता हूं एक पहलू समर्पण का है। समर्पण किस लिए करें? आत्मसात करने के लिए स्वतः ही जब आप समर्पित हो जाते हैं तो आप आत्मसात करते हैं। एक बार आत्मसात करने के पश्चात् आपको चाहिए कि उन शक्तियों को अपने अन्दर बनाए रखें, ग्रहण करे और विश्वस्त हों कि आपके अन्दर यह शक्तियां हैं। यहां आ कर सहजयोगी असफल हो जाते हैं। सहजयोग की शुरूआत में तो कोई सहजयोगी न किसी और को छूने के लिए भी तैयार था और न ही किसीकी कुण्डलिनी उठाने के लिए तैयार था। मैंने सोचा कि ये माध्यम मैंने तैयार किये हैं। पर इनमें से तो कोई अपना हाथ उठाने के लिए भी तैयार नहीं। किस प्रकार मैं यह कार्य करूंगी? नासिक क्षेत्र में हमने एक कार्यक्रम किया। मैं नासिक में थी और उनका कार्यक्रम यहां से तीस मील दूर था। आधे रास्ते पर जब हम पहुंचे तो हमारी कार खराब हो गयी। सारे सहजयोगी कार्यक्रम में पहुंच चुके थे और वहां आई हुई जनता बहुत परेशान हो रही थी। तब सहजयोगियों ने कहा कि "हम आपको आत्मसाक्षात्कार देंगे।" उन्होंने आत्मसाक्षात्कार दिया और यह पहला समय था जब सहजयोगियों ने जाना कि वे आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। इसके बाद सबने आत्मसाक्षात्कार देना शुरू कर दिया। मान लें कि आपमें ये शक्तियां हैं। मैं इन शक्तियों को व्यर्थ नहीं करूंगा। मैं इनका उपयोग करूंगा। एक बार मैं समुद्री जहाज में यात्रा कर रही थी। वहां बर्फ जमाने वाले कमरे में एक व्यक्ति पकड़ गया और उसे निमोनिया हो गया। कप्तान मेरे पास आया और कहने लगा कि इस लड़के को निमोनियां हो गया है और हमें हैलिकॉप्टर से डाक्टर लाना होगा। मैंने उसे कहा कि मैंने तुम्हें आत्मसाक्षात्कार दिया है, अब तुम भी एक डाक्टर हो। आप जाकर अपना हाथ उसके हृदय पर रख दो। उसने ऐसा ही किया और वह निमोनिया ग्रस्त व्यकित ठीक हो गया। कैप्टन स्वयं पर हैरान था। यदि आप अपनी शक्तियों को ग्रहण नहीं करते, बस बैठकर ध्यान ही करते हैं तो उसका क्या लाभ है?

शिव की अवस्था प्राप्त करने के बाद आपको आदि शक्ति का कार्य करना होगा। आपके अन्दर इच्छा जागृत होनी चाहिए कि हम सहजयोग को फैलाएं, इसे कार्यान्वित करें। परन्तु सावधान

रहें कि कुछ समय तक आप बन्धन एवं अहमग्रस्त हो सकते हैं। स्वयं को सावधानी पूर्वक देखें। सावधानी पूर्वक देखने से आप बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं, कुछ लोगों ने, देश-देश में, इस कार्य की जिम्मेदारी ली है।

समर्पण में पहला कार्य शिव और सदा शिव रूपी अपनी आत्मा की अवस्था को पहुँचना है। दूसरी अवस्था अन्य लोगों के बारे में सोचना है। प्रथम यह व्यष्टि (व्यक्तिगत लाभ) है जो बाद में 'समष्टि' (सामूहिक) बन जाती है। अर्थात आपने इसे सामूहिकता पर कार्यान्वित करना है। जिन लोगों को कभी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ वे भी बहुत आयोजन करते रहे हैं। पर आपको तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। अब ये आवश्यक है कि यह प्रकाश आप दूसरे लोगों को भी दें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री माता जी के सम्मुख

श्रीमाता जी के सम्मुख जाने से पूर्व सोचें कि आप किस के सम्मुख जा रहे हैं। इससे हमें अपना दृष्टि कोण एवं आचार-व्यवहार ठीक रखने में सहायता मिलती है।

श्रीमाता जी यदि मंच पर बैठी हों तो उनके पीछे की ओर से उनके सम्मुख आना चाहिए। सामने से भी श्रीमाता जी के सम्मुख न आएं।

श्रीमाता जी के प्रस्थान से पूर्व हमें कभी भी वह स्थान नहीं छोड़ना चाहिए जहां कार्यक्रम हो रहा है।

महिलाओं को मंच पर यदि श्रीमाता जी की पूजा का सौभाग्य प्राप्त हो तो उन्हें श्रीमाता जी के आदेशानुसार कार्य करना चाहिए, विशेषकर श्रीमाता जी के चरण कमलों की साज-सज्जा करते हुए अपनी मर्जी से कुछ नहीं किया जाना चाहिए।

अब एक ऐसा समय आ गया है कि श्रीमाता जी के बहुमूल्य समय को हमें खराब नहीं करना चाहिए। जब तक श्रीमाता जी स्वयं समय न प्रदान करें तब तक उनके पास कोई भी बीमारी ठीक करवाने के लिए न जाएं। इस सम्बन्ध में केन्द्र के अगुआ से सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक है।

श्रीमाता जी जब मंच की ओर आ रही हों तो कोई उनके सम्मुख न तो लेटे और न ही उनके चरण कमल स्पर्श करें।

अन्य धर्मों की तरह हमें आचार संहिता को धर्म नहीं बना लेना।

हम सभी सहजयोगी जब भी परस्पर मिलें या बात-चीत करें या मिलकर कोई कार्य करें तब भी हमें इन नियमों का पूर्ण सम्मान करना चाहिए।